IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति

डॉ0 पवन कुमार झा
आनन्द किशोरी नगर
लक्ष्मीसागर,दरभंगा
बिहार –846009

वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति के अनेक सिद्धान्त विद्यमान है, जिनमें कुछ का आधार तो पौराणिक है तथा कुछ सामाजिक विकास के वैज्ञानिक विष्लेषण पर आधारित है।

विराट पुरूष के अंगों से उत्पत्ति –ऋगवेद के दसवे मण्डल में हजार सिर, हजार ऑख तथा हजार पैरों वाले एक विराट पुरूष की कल्पना की गयी है, जिससे समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। उसी विराट पुरूष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघा से वैष्य और चरण से शुद्र उत्पन्न हुए।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहु राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैष्यः पदम्यां शुद्रोऽजायत।।

यही सिद्धान्त परवर्ती संस्कृत साहित्य में भी देखने को मिलता है पर विराट पुरूष के स्थान पर इन्हे ब्रह्मा से उत्पन्न कहा जाने लगा। महाभारत,मनुस्मृति आदि में भी यही उल्लेख मिलता है।

पुराण साहित्य में वायुपुराण एवं विष्णुपुराण में भी यही वर्णन मिलता है किन्तु इनमें क्षत्रियों की उत्पत्ति बाहु से न बताकर वक्ष स्थल से कही गई है।

मंत्रों से उत्पत्ति – शपतथ ब्रह्मण में ब्रह्मण को गायत्री मंत्र के शब्द भूः से क्षत्रियॉ को भुवः से तथा वैष्य को स्वः से उत्पन्न कहा गया है, तथा शुद्र सभी वर्णो का सहायक मात्र था अतः उसे किसी मंत्र से सम्बन्धित नही किया गया।

प्रकृति के तीन गुणों से वर्णनव्यवस्था की उत्त्पत्ति

इस सिद्धांत का आधार भगवद्गीता में श्री कृष्ण का यह कथन है कि मैं गुण और कर्म के विभाजन के द्वारा चारों वर्णो को बनाया। मैं ही बनाने वाला और नष्ट भी करने वाला हूँ।

गीता में प्रकृति के तीन गुणों सत्व, रज और तम की व्याख्या भी की गई है।

कर्मानुसार वर्णो की उत्पत्ति – छान्दोदय उपनिषद में पूर्व जन्म के किये गये कर्मो के अनुसार विभिन्न वर्णो का जन्म होता है। जितने अच्छे कर्म होगे ऊँचे वर्ण में जन्म होगा।

अच्छे और बुरे कर्म के आधार पर क्रमषः ब्राह्मण क्षत्रिय वैष्य एवं शुद्र वर्ण में जन्म होता है।

व्यावसायिक उत्पत्ति –

वैदिक काल की प्रारंभिक अवस्था में व्यवसाय सम्बन्धी प्रतिबन्ध नहीं थे अपने स्वभाव अपनी प्रतिभा तथा क्षमता के अनुरूप लोग कार्य ग्रहण करते थे। वैदिक कार्य करने वाले ब्राह्मण, बाहुबल या रक्षण कार्य करने वाले क्षत्रिय, व्यापार एवं वाणिज्य की ओरा उन्मुख व्यक्ति वैष्य तथा सेना कार्य करने वाले शुद्र कहे गए।

इस प्रकार एक ही परिवार के अलग –अलग सदस्य अलग –अलग वर्ण के हो सकते थे।

वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति का विकासवादी सिद्धांत –

महाभारत के शांति पर्व में कहा गया है कि ब्रह्म ने सर्वप्रथम ब्रह्मणों में सत्य, धर्म, तप तथा सदाचार आदि नैतिक गुण उत्पन्न किये। याद में जो सांसारिकता की ओर अधिक उन्मुख दिखे, जो तीव्र स्वभाव के क्रोधी तथा साहसी थे उन्होने स्वधर्म का परित्याग कर दिया इन्हे क्षत्रिय कहा गया। जो पषुपालन,कृषि आदि करने लगे उन्हे वैष्य कहा गया,हिंसात्मक कार्यो में रूचि रखनेवाले, झुठ बोलने वाले, लोभी, अपवित्र तथा कृष्ण वर्ण वाले शुद्र कहे जाने लगे।

इस प्रकार वर्ण व्यवस्था ब्रह्म के प्रांरभिक समाजव्यवस्था की ही विकसित रूप थी।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रारंभ में प्रकृति के अनुसार कर्म निष्चित किये गये । कालान्तर में आवष्यकताओं के बढ़ने पर उनके सम्पादन हेतु भिन्न –भिन्न वर्ग अस्तित्व में आए। इनके कार्यानुसार ही इन्हे ब्राह्मण क्षत्रिय वैष्य एवं शुद्र नाम भी दिये गये।